डॉ. किरण बाला की कविताएँ

टिल्हा धर्मशाला, दक्षिणी गली सं.-1,
नवागढ़ी, गया, बिहार- 823001
kiranbala073@gmail.com

लक्ष्मी यों ही नहीं आती

जिस घर में लक्ष्मी का सम्मान नहीं,
प्यार व दुलार नहीं
उस घर में है वह आती नहीं,
वह द्वार भी ताकती नहीं

जिस घर में ममता रोती है
विष का प्याला भी पीती है
दहेज़-दानव के कारण वह
घुटती, पिसती औ जलती है

फिर भी मुख से न उफ़ करती
तन-मन की पीड़ा है सहती
भूखे बच्चों की भूख मिटाती
घर-बाहर का बोझ उठाती

लेकर सबको साथ चली,
सबकी पीड़ा भी ले हाथ चली
दिन-रात एककर काम किया,
उसे गरल अपमान दिया

क्या मानवता की बात यही
क्या न्याय यही अन्याय नहीं
जिस घर में ऐसा होता है
सुख औ चैन सदा ही खोता है

दहेज़-दानव को मार सदा ही
सुख-चैन से तुम जीते रहो
तुम धीर-वीर-गंभीर सदा जीते हो
और जग जीतते रहो

बेटे-बेटी में तो भेद नहीं,
फिर क्यों करता है तू खेद नहीं
मुखाग्नि भी देती बेटी है और
वंश चलाती भी तो बेटी है।

तुम रोको उसकी राह नहीं मत टोको
सत्कर्म देख कहीं
नित बढ़ने दो, बढ़ते जाओ तुम भी
शिखर चढ़ते जाओ

नारी बिजली है वेगवती धारा है
दानव भी इससे हारा है
फिर तुम क्यों करते शत्रुता,
क्यों न कर लेते हो मित्रता

अपने पाँव कुल्हाड़ी मत मारो,
हो सके तो जन को तारो
स्वार्थ-असुरता को तू संहारो,

निष्कलुष हो, मन को हारो

देख तुझको देवगण उतरेंगे
तुम्हारे लिए खुशियाँ लाएँगे
तारेगण झूमेंगे-नाचेंगे लोग-बाग भी
सदा बिहँसेंगे-गाएँगे

घर-घर में फिर लक्ष्मी होंगी,
रुनझुन-रुनझुन वह थिरकेंगी
जीवन के संपूर्ण सुखद पल
कदम-कदम कलियाँ बिखरेंगी

नयी सुबह

अहा!
प्रकृति के प्रांगण में
आयी है एक सुबह
और आएगी वह नयी सुबह
जब विहग-वृंद भी
मानव की मानवता से
परिचित हो चुके होंगे
बस, आवश्यकता है
सकारात्मक सोच की
संवेदनशीलता व आत्मीयता की
नैतिकता व मौलिकता की
और अनिवार्यता है
पशुता-त्याग की
फिर देखिए स्वर्णिम छटा
कलियों का खिलना
भौंरों का गुनगुनाना
चिड़ियों का चहकना व फुदकना
और माता के अंचल से निकल
बाला का
निर्भीक खिलखिलाना
स्वच्छंद विचरना
प्रकृति-प्रांगण में उसका
जीवन-कौशल विकसित करना
और नयी उड़ान भरना

स्वदेश प्रेम

हे भारतभूमि
तुम क्यों रो रही हो
क्यों निष्प्राण सो रही हो
मिट जाएँगे हम
तुम्हारी इज्जत की खातिर
तुम्हारी खातिर ही
निशा रानी भी
झर-झर अश्रु बहाती है
अथवा तुम्हारे ही अश्रु
अवशोषित कर
सृष्टि को सिक्तकर
मनुज को अनुभूत व
कर्त्तव्य-बोध कराती है
उसे सावधान करती है
कि जागो, राज जा रहा है
बचा लो उस संस्कृति को
जहाँ नारियों का सम्मान था
औ सभी वर्गों का मान था
सत्कर्म व सद्भाव था
आज करना होगा परित्याग
दुष्वृत्तियों का, दुष्कर्मों का
और करना होगा
निश्छल भाव से
स्वदेश प्रेम, समस्त जीवप्रेम

बहनों सजग हो जाओ

बहनों सजग हो जाओ
आगे अंधकूप है
गिरा जा रहा समाज
मत गिरो तुम भी
उसके साथ
बचा लो उस अंधे समाज को
जो हमें
दहेज जैसी कुरीति के फंदे में
जकड़े हुए है
उसे नयी राह दिखा दो
लोग कहते हैं तुम्हें
अबला
पर उन्हें पता नहीं
तुम सबला हो
लक्ष्मीबाई की ही तो बहनें हो
उन्हें

सबक सिखा दो
काट डालो उस फंदे को
तोड़ डालो जंजीरों को
और आओ, चलो गाते चलें-

हम हैं लक्ष्मीबाई की बहनें
कभी न मानेंगी हम हार
शोषण-अत्याचार को हम
मिटा देंगी कर-करके वार

कब आएगा वह

था प्राबल्य पूंजीपतियों का उस युग में
निम्नवर्गीय होते थे दास
किया जाता था शोषण उनका
चमन-फूल बन जीते थे वे

राजतंत्र हुआ जब लुप्त
प्रजातंत्र का उदय हुआ
ऊँच-नीच का मिटा न भेद
और अधिक मजबूत हुआ

क्या यही है स्वतंत्रता
क्या है यही प्रजातंत्र
याद करें वैशाली गणराज्य
और याद करें वह रामराज्य

याद करें पूर्वज राजा को
भेस बदल जो घूमते थे
निज जीवन-सुख त्याग
वे पर-पीड़ा को चूमते थे

न करते थे वे भेद-भाव
न ही करते वे मनमुटाव
नर ही नहीं हर प्राणी से
रखते थे वे बस प्रेमभाव

कौन आएगा, कब आएगा
अमृत-बूँद पिलाने को
भेद-भाव मिट जाएँगे
धरती को स्वर्ग बनाने को